B.A. Part - I, Paper - II
Lecture - 22
Dr. Smita Kumari, Assistant Professor,
Marwari College, Darbhanga.

TOPIC पैरेटो का तार्किक प्रयोगात्मक ज्ञान या पद्धतिशास्त्र का सिद्धांत

—— × —— × —— × ——

Pareto की गणना 19वीं शताब्दी के प्रमुख समाजशास्त्रियों में की जाती है। वह प्रख्यात अर्थशास्त्री तथा समाजशास्त्री का जन्म 15 जुलाई सन् 1848 को पेरिस में हुआ था। उनकी माता पेरिस की तथा पिता जिनेवा के नागरिक थे। प्रारंभिक जीवन में विज्ञान के छात्र होने के नाते विज्ञान तथा वैज्ञानिक विधि के प्रति उनकी प्रगाढ़ आस्था थी। अपने बाद के जीवन में जब उन्होंने समाजशास्त्र के प्रति अपनी रुचि दिखाई तो उन्होंने समाजशास्त्र को भी एक विशुद्ध विज्ञान का दर्जा देना चाहा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अगर समाजशास्त्र को विज्ञान का दर्जा प्राप्त करना है तो उसे तार्किक प्रयोगात्मक

पद्धति का ही प्रयोग करना होगा। साथ ही क्योंकि यह A कथ की किसी विशुद्ध विज्ञान का मौलिक इसकी पद्धति पर ही होता है। और वैज्ञानिक पद्धति को तार्किक प्रयोगात्मक होना ही है।

तार्किक प्रयोगात्मक पद्धति की विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए Pareto का कहना है कि यह पद्धति इस मान्यता पर आधारित है कि सिर्फ उन्हीं वस्तुओं का वैज्ञानिक अध्ययन संभव है जिनका अध्ययन अनुभवों से कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में ऐसी कोई वस्तु या घटना जो अवलोकन से परे है अथवा जिसकी सत्यता की जांच तर्क द्वारा संभव नहीं है तार्किक प्रयोगात्मक समाजशास्त्र का विषय वस्तु नहीं बन सकता है। दूसरे शब्दों में तार्किक प्रयोगात्मक समाजशास्त्र का संबंध तथ्यों से होता है। अतः समाजशास्त्र के क्षेत्र में दी जाने वाली सिद्धांत तथ्य एवं उनके बीच पाए जाने वाली सिद्धांत वास्तविक सह संबंध को उद्घाटित करता है

इसी संबंध में Pareto ने यह भी कहा है कि तार्किक प्रयोगात्मक समाजशास्त्र में अन्तिम सत्य अपरिवर्तनीय संबंध की बात नहीं की जाती। विज्ञान में सत्य की खोज अवश्य की जाती है परन्तु वैज्ञानिक सत्य यह मानकर चलता है कि सत्य की अवधारणा एक सापेक्षिक अवधारणा है। आज जो सत्य है कल वह गलत प्रमाणित हो सकता है या फिर उसमें संशोधन की आवश्यकता हो सकती है अतः अन्तिम सत्य या तथ्यों के बीच अपरिवर्तनीय संबंध की बात नहीं की जा सकती है इसके बदले में विज्ञान सदा संभावना के संदर्भ में बात करती है

Pareto ने अपने से पूर्ववर्ती समाजशास्त्रियों के लेखों की कड़ी आलोचना करते हुए कहा है की अब तक समाजशास्त्र के क्षेत्र में जो भी विचार या सिद्धान्त दिए गए हैं वे या तो आन्तिम सत्य या अपरिवर्तनीय संबंध की बात करते हैं या फिर धार्मिक या भौतिक सिद्धान्त की तरह अनैतिक, अनुचित, सभी गलत

आदि की बात करती है उन्होंने इस संदर्भ में विशेषकर Comte, Spencer, Marx आदि के सिद्धांतों की कटु आलोचना की और कहा कि वैज्ञानिक सिद्धांतों में 'मानवता के धर्म' 'नैतिक शिक्षा' 'प्रगति' 'सभ्यता' 'प्रजातंत्र' 'समाजवाद' आदि अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है। जिनका परीक्षण वैज्ञानिक या तार्किक प्रयोगात्मक विधि के द्वारा कदापि संभव नहीं है। Pareto ने यह भी कहा कि ऐसे विचार सुनने में अच्छे लगते हैं परन्तु व्यावहारिक जीवन में इसका अस्तित्व मिलना असंभव है।

Pareto ने तार्किक प्रयोगात्मक समाजशास्त्र के अन्तर्गत अनोखी एवं आश्चर्यजनक घटनाओं के अध्ययन के स्थान पर साधारण एवं सामान्य घटनाओं के अध्ययन पर बल दिया। उन्होंने समाजशास्त्र के क्षेत्र में सांख्यिकीय पद्धति के प्रयोग पर विशेष बल दिया। आज समाजशास्त्र के क्षेत्र में सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग उन्हीं का परिणाम है।

Scanned by CamScanner

आलोचना —

1. Pareto तार्किक प्रयोगात्मक समाजशास्त्र की विशेषताओं की चर्चा करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया है कि विज्ञान का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है न कि उसके उपयोग से। आलोचकों का कहना है कि विज्ञान का भी स्पष्ट पक्ष होता है, ज्ञान प्राप्ति और उसका प्रयोग। सत्य और ज्ञान की खोज की सार्थकता और सामर्थ्य तभी है जब इसका प्रयोग मानव जाति के कल्याण के लिए किया जाए।

2. यद्यपि Pareto ने समाजशास्त्र को तार्किक प्रयोगात्मक विज्ञान का दर्जा देना चाहा परन्तु स्वयं अपने समाजशास्त्रीय लेखों में उन्होंने मूल प्रवृत्ति, sentiments आदि ऐसे विषयों को चुना जो कि अवलोकन और तार्किक परीक्षण से परे हैं।

3. Pareto ने यद्यपि सामाजिक तथ्यों के बीच अनुरूपीय एवं प्रकार्यात्मक संबंध की कल्पना की परन्तु अपने लेखों में इन्होंने मानव की मूल प्रवृत्तियों को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया

Scanned by CamScanner

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक विचारधारा के क्षेत्र में ~~[illegible]~~ व Pareto का योगदान वास्तव में प्रशंसनीय हैं। Pareto के अनुकूल की अधिकांश विचारों में दिए हुए सामाजिक तत्व को इस प्रकार प्रदर्शित किया जैसा अब तक किसी सामाजिक विचारक ने नहीं किया था।

Smita Kumari
11/5/20.